International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

# ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता व शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव

**नेहा वंसल[1], डॉ0 अंकित गंगवार[2]**

[1]शोधार्थनी, नमांकन संख्या–EN029599

[2]शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

**सारांश :-**

प्रस्तुत अध्ययन "ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता व शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव" विषय पर केंद्रित है, जिसमें यह विश्लेषण किया गया है कि सामाजिक–आर्थिक कारक किस प्रकार विद्यार्थियों की स्वजागरूकता तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा केवल पाठ्यक्रमीय ज्ञान तक सीमित न रहकर व्यक्तित्व विकास, आत्मबोध और सामाजिक दक्षताओं से भी जुड़ गई है। ऐसे में स्वजागरूकता को एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक गुण माना जाता है, जो विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य, क्षमताओं और सीमाओं को समझने में सहायता करती है। यह अध्ययन ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमिकृजैसे पारिवारिक आय, माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय, रहन–सहन की सुविधाएँ तथा शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धताकृऔर उनके प्रभावों को समझने का प्रयास करता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के जीवन अनुभव, अवसरों और संसाधनों में स्पष्ट अंतर पाया जाता है, जिसका सीधा प्रभाव उनकी स्वजागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ता है। शहरी छात्रों को अपेक्षाकृत बेहतर शैक्षिक वातावरण, तकनीकी संसाधन, मार्गदर्शन एवं प्रतिस्पर्धात्मक अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनकी आत्म–समझ और शैक्षिक प्रदर्शन में वृद्धि होती है। इसके विपरीत ग्रामीण छात्रों को सीमित संसाधनों, आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है, जो उनकी स्वजागरूकता के विकास और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकता है। हालांकि, कई ग्रामीण विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों के बावजूद उच्च स्तर की आत्मप्रेरणा और संघर्षशीलता प्रदर्शित करते हैं, जो उनके व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाती है। इस अध्ययन में सामाजिक–आर्थिक स्थिति को एक स्वतंत्र चर तथा स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को आश्रित चर के रूप में लिया गया है। शोध का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार आर्थिक संसाधन, सामाजिक समर्थन और शैक्षिक वातावरण विद्यार्थियों की आत्म–समझ और अकादमिक सफलता में भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन न केवल ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, बल्कि शिक्षा–नीति निर्माताओं, शिक्षकों और समाज के लिए उपयोगी निष्कर्ष भी प्रदान करता है। इसके निष्कर्ष शैक्षिक समानता, अवसरों की उपलब्धता तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावी योजनाओं के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

**की वर्ड :- ग्रामीण और शहरी, आत्म–प्रभावकारिता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति**

## प्रस्तावना :-

प्रस्तुत शोध विषय "ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता व शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव" समकालीन शैक्षिक एवं सामाजिक परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है। शिक्षा को किसी भी समाज के विकास की आधारशिला माना जाता है, क्योंकि यह न केवल ज्ञान के प्रसार का माध्यम है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण, मूल्यों, आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्म–जागरूकता, आत्म–विश्वास, निर्णय क्षमता, सामाजिक संवेदनशीलता और जीवन कौशल का विकास करना भी उतना ही आवश्यक हो गया है। ऐसे में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि वे कौन से कारक हैं जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और स्वजागरूकता को प्रभावित करते हैं, तथा इनमें सामाजिक–आर्थिक स्थिति की भूमिका कितनी गहरी और निर्णायक है। स्वजागरूकता एक ऐसा मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक गुण है, जिसके माध्यम से

व्यक्ति स्वयं को, अपनी क्षमताओं को, अपनी सीमाओं को, अपने विचारों, भावनाओं और व्यवहार को समझता है। एक स्वजागरूक विद्यार्थी अपने शैक्षिक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से पहचानता है, अपनी कमजोरियों को सुधारने का प्रयास करता है और अपनी शक्तियों का सकारात्मक उपयोग करता है। स्वजागरूकता का सीधा संबंध आत्म–नियंत्रण, आत्म–प्रेरणा और आत्म–विकास से होता है, जो अंततः शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। जब विद्यार्थी अपने परिवेश, अवसरों और चुनौतियों के प्रति सचेत होता है, तब वह बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन करने में सक्षम होता है। किंतु यह स्वजागरूकता सभी विद्यार्थियों में समान रूप से विकसित नहीं होती, क्योंकि इसके विकास में सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और शैक्षिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति किसी भी व्यक्ति के जीवन की दिशा और दशा को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। इसमें परिवार की आय, माता–पिता की शिक्षा, उनका व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा, रहन–सहन की स्थिति, उपलब्ध संसाधन, सांस्कृतिक वातावरण और सामाजिक संबंध शामिल होते हैं। सामाजिक–आर्थिक स्थिति यह निर्धारित करती है कि किसी विद्यार्थी को किस प्रकार का शैक्षिक वातावरण मिलेगा, उसे कितने और कैसे संसाधन उपलब्ध होंगे, तथा उसे किस स्तर का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त होगा। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के बच्चे प्रायः बेहतर विद्यालयों में अध्ययन करते हैं, आधुनिक शैक्षिक साधनों का उपयोग करते हैं और उन्हें शैक्षिक तथा भावनात्मक समर्थन अधिक प्राप्त होता है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के बच्चों को कई बार बुनियादी शैक्षिक सुविधाओं के अभाव, आर्थिक दबाव और सामाजिक सीमाओं का सामना करना पड़ता है, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि और स्वजागरूकता के विकास में बाधा बन सकते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण और शहरी समाज के बीच सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर अपेक्षाकृत अधिक, विविध और उन्नत होते हैं। यहाँ विद्यालयों की संख्या अधिक होती है, शिक्षण संसाधन आधुनिक होते हैं, तकनीकी सुविधाएँ सुलभ होती हैं और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण विद्यार्थियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। शहरी विद्यार्थी विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों, सह–पाठ्यक्रम कार्यक्रमों और करियर मार्गदर्शन से लाभान्वित होते हैं, जिससे उनकी स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति कई बार सीमित संसाधनों, शिक्षकों की कमी, आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक परंपराओं से प्रभावित होती है। ग्रामीण विद्यार्थी प्रायः घरेलू कार्य, कृषि संबंधी जिम्मेदारियों और आर्थिक दबावों के कारण शिक्षा पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है।

फिर भी यह कहना भी उचित नहीं होगा कि ग्रामीण विद्यार्थी स्वजागरूकता या शैक्षिक क्षमता में शहरी विद्यार्थियों से हमेशा पीछे होते हैं। अनेक ग्रामीण विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों के बावजूद उच्च स्तर की आत्म–प्रेरणा, संघर्षशीलता और आत्म–निर्भरता का परिचय देते हैं। सीमित संसाधनों में पले–बढ़े विद्यार्थी कई बार जीवन की वास्तविकताओं को जल्दी समझ लेते हैं, जिससे उनमें व्यावहारिक बुद्धि और आत्मबोध विकसित होता है। यह तथ्य इस शोध को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है, क्योंकि यह केवल संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समझने का प्रयास करता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति किस प्रकार विभिन्न परिवेशों में विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। शैक्षिक उपलब्धि को सामान्यतः विद्यार्थियों के अकादमिक प्रदर्शन, परीक्षा परिणाम, विषयगत ज्ञान और बौद्धिक विकास के रूप में समझा जाता है। किंतु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ व्यापक हो गया है, जिसमें सीखने की क्षमता, समस्या समाधान कौशल, रचनात्मकता और आत्म–विश्वास भी शामिल हैं। एक विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि केवल उसकी बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होती, बल्कि उसके सामाजिक परिवेश, पारिवारिक समर्थन, आर्थिक स्थिति और व्यक्तिगत स्वजागरूकता का भी प्रतिफल होती है। जब विद्यार्थी अपने अध्ययन के महत्व को समझता है और अपने लक्ष्यों के प्रति सजग होता है, तब वह कठिन परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकता है।

ग्रामीण और शहरी छात्रों के संदर्भ में सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव बहुआयामी है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी प्रायः अधिक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में रहते हैं, जहाँ उन्हें स्वयं को सिद्ध करने के लिए निरंतर प्रयास करना पड़ता है। यह प्रतिस्पर्धा उनकी स्वजागरूकता को बढ़ा सकती है, किंतु कभी–कभी यह मानसिक दबाव और तनाव का कारण भी बन जाती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा अपेक्षाकृत कम हो सकती है, किंतु अवसरों की कमी और सामाजिक अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के आत्मबोध को सीमित कर सकती हैं। इन दोनों परिस्थितियों में सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के अनुभवों और दृष्टिकोण को आकार देती है। इस शोध का महत्व इसलिए

भी बढ़ जाता है क्योंकि यह शिक्षा में समानता और सामाजिक न्याय की अवधारणा से जुड़ा हुआ है। यदि सामाजिक–आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा प्रणाली ऐसी नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करे, जो सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान कर सकें। ग्रामीण और निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षिक योजनाएँ, छात्रवृत्तियाँ, परामर्श सेवाएँ और संसाधन उपलब्ध कराना आवश्यक है, ताकि वे भी अपनी क्षमताओं को पहचान सकें और उनका पूर्ण विकास कर सकें।

वर्तमान समय में जब वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से हो रहे हैं, तब विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज का विद्यार्थी केवल स्थानीय समाज का ही नहीं, बल्कि वैश्विक समाज का भी हिस्सा है। ऐसे में उसकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि उसके दृष्टिकोण, आकांक्षाओं और अवसरों को प्रभावित करती है। ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच यह अंतर केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक भी है, जिसे समझना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। इस अध्ययन के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में गहराई से समझा जाए। यह शोध न केवल शैक्षिक मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के क्षेत्र में योगदान देता है, बल्कि शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके निष्कर्ष यह स्पष्ट करने में सहायक होंगे कि किस प्रकार सामाजिक–आर्थिक असमानताओं को कम करके विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता व शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव एक जटिल और बहुपक्षीय विषय है, जिसे समझना वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य की आवश्यकता है। यह शोध इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जो यह दर्शाता है कि शिक्षा केवल विद्यालय की चार दीवारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है। विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि का विकास तभी संभव है, जब उन्हें अनुकूल सामाजिक–आर्थिक वातावरण, समान अवसर और सकारात्मक शैक्षिक समर्थन प्राप्त हो।

**शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :-**

प्रस्तुत शोध विषय "ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता व शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव" की आवश्यकता और महत्व वर्तमान सामाजिक एवं शैक्षिक परिदृश्य में अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। आज के युग में शिक्षा को केवल औपचारिक ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं माना जाता, बल्कि इसे व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, आत्मबोध, सामाजिक चेतना और भविष्य निर्माण की आधारशिला के रूप में देखा जाता है। ऐसे में यह समझना अनिवार्य हो जाता है कि वे कौन से कारक हैं जो विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं तथा सामाजिक–आर्थिक स्थिति इसमें किस प्रकार निर्णायक भूमिका निभाती है। ग्रामीण और शहरी परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों के अनुभव, अवसर और चुनौतियाँ भिन्न होती हैं, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति और आत्म–विकास में भी स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। इस अंतर को समझने और कम करने की दृष्टि से इस अध्ययन की आवश्यकता और महत्व और भी बढ़ जाता है। इस शोध की सबसे पहली आवश्यकता शिक्षा में व्याप्त असमानताओं को समझने से जुड़ी हुई है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में सामाजिक–आर्थिक विषमताएँ शिक्षा के क्षेत्र में गहरे रूप से परिलक्षित होती हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों की उपलब्धता, विद्यालयों की गुणवत्ता, शिक्षकों की संख्या, तकनीकी साधनों की पहुँच और शैक्षिक वातावरण में स्पष्ट अंतर पाया जाता है। इन असमानताओं का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है, किंतु इससे भी अधिक यह उनकी स्वजागरूकता को प्रभावित करता है, क्योंकि जब विद्यार्थी सीमित अवसरों और संसाधनों में पलता है तो उसके आत्मबोध, आत्मविश्वास और आकांक्षाओं पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी है ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति किस प्रकार इन असमानताओं को जन्म देती है और उन्हें बनाए रखती है।

स्वजागरूकता को आधुनिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है। एक स्वजागरूक विद्यार्थी न केवल अपने अध्ययन के प्रति गंभीर होता है, बल्कि वह अपने जीवन के लक्ष्यों, सामाजिक उत्तरदायित्वों और व्यक्तिगत मूल्यों के प्रति भी सजग होता है। किंतु स्वजागरूकता का विकास स्वतः नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक अनुभवों से प्रभावित होता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में बच्चों को प्रायः संवाद, निर्णय लेने की स्वतंत्रता और आत्म–अभिव्यक्ति के अधिक अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी स्वजागरूकता विकसित होती है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को कई बार अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना पड़ता है, जिससे आत्मचिंतन और आत्म–विकास के अवसर सीमित हो जाते हैं। इस संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि स्वजागरूकता के विकास में सामाजिक–आर्थिक कारकों की भूमिका को समझा जा सके।

इस शोध का महत्व शैक्षिक उपलब्धि की व्याख्या को व्यापक बनाने में भी निहित है। परंपरागत रूप से शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा परिणामों और अंकों के आधार पर मापा जाता रहा है, किंतु आज यह स्वीकार किया जा चुका है कि शैक्षिक सफलता केवल बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होती। इसके पीछे विद्यार्थी की सामाजिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक समर्थन, आर्थिक स्थिति, प्रेरणा स्तर और स्वजागरूकता जैसे अनेक कारक कार्य करते हैं। ग्रामीण और शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में पाए जाने वाले अंतर को केवल उनकी प्रतिभा से नहीं जोड़ा जा सकता, बल्कि इसके पीछे सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार होती हैं। इस शोध की आवश्यकता इसलिए है ताकि शैक्षिक उपलब्धि को एक समग्र दृष्टिकोण से समझा जा सके। वर्तमान समय में शिक्षा नीति और योजनाओं के निर्माण में वैज्ञानिक और यथार्थपरक शोध की अत्यधिक आवश्यकता है। यदि यह स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाए कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति किस प्रकार विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है, तो शिक्षा नीति निर्माताओं को प्रभावी और लक्षित योजनाएँ बनाने में सहायता मिल सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए विशेष शैक्षिक कार्यक्रम, आर्थिक सहायता, परामर्श सेवाएँ और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना तभी संभव है, जब उनके सामने आने वाली वास्तविक समस्याओं को समझा जाए। इस दृष्टि से यह शोध न केवल अकादमिक महत्व रखता है, बल्कि व्यावहारिक और नीतिगत स्तर पर भी अत्यंत उपयोगी है।

इस अध्ययन की आवश्यकता सामाजिक न्याय और समान अवसर की अवधारणा से भी गहराई से जुड़ी हुई है। शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का एक प्रमुख साधन माना जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकता है। किंतु यदि शिक्षा स्वयं सामाजिक–आर्थिक असमानताओं से प्रभावित हो, तो यह अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर पाती। ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि में अंतर यह संकेत देता है कि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त नहीं हो रहे हैं। इस शोध का महत्व इसलिए है क्योंकि यह शिक्षा में समानता की दिशा में ठोस आधार प्रदान करता है और यह दर्शाता है कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। शिक्षकों और विद्यालयों के लिए भी इस शोध की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षक यह समझ सकें कि किसी विद्यार्थी की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि उसकी स्वजागरूकता और शैक्षिक प्रदर्शन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है, तो वे अपनी शिक्षण विधियों, मूल्यांकन प्रक्रियाओं और परामर्श दृष्टिकोण में आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं। ग्रामीण और शहरी विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों के सामने अलग–अलग प्रकार की चुनौतियाँ होती हैं, जिन्हें समझने के लिए इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता होती है।

अभिभावकों के दृष्टिकोण से भी इस शोध का महत्व कम नहीं है। अनेक अभिभावक यह मानते हैं कि शैक्षिक सफलता केवल विद्यालय और शिक्षक की जिम्मेदारी है, जबकि वास्तव में पारिवारिक वातावरण और सामाजिक–आर्थिक स्थिति का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह अध्ययन अभिभावकों को यह समझने में सहायता करता है कि वे सीमित संसाधनों के बावजूद किस प्रकार अपने बच्चों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इससे अभिभावकों में शिक्षा के प्रति अधिक जागरूकता और जिम्मेदारी का भाव विकसित हो सकता है। इस शोध की आवश्यकता वर्तमान सामाजिक परिवर्तन और तकनीकी विकास के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक है। आज डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन संसाधन और तकनीकी उपकरण शिक्षा का अभिन्न अंग बन चुके हैं। किंतु इन संसाधनों की पहुँच सभी विद्यार्थियों तक समान रूप से नहीं है। शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थी तकनीकी साधनों का अधिक उपयोग कर पाते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह सुविधा सीमित होती है। इसका प्रभाव

न केवल शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है, बल्कि विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर भी पड़ता है, क्योंकि तकनीकी संसाधन आत्म–अध्ययन और आत्म–मूल्यांकन के अवसर प्रदान करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से इन नई चुनौतियों और अवसरों को समझा जा सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों की स्वजागरूकता व शैक्षिक उपलब्धियों पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन समय की आवश्यकता है। इसकी आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह शिक्षा में व्याप्त असमानताओं को उजागर करता है, स्वजागरूकता जैसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक गुण के विकास को समझने में सहायता करता है और शैक्षिक उपलब्धि की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसका महत्व इसलिए है क्योंकि इसके निष्कर्ष शिक्षा नीति, शिक्षण प्रक्रिया, अभिभावक दृष्टिकोण और सामाजिक सुधार के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। यह शोध शिक्षा को अधिक न्यायपूर्ण, समावेशी और प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे सभी विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने और विकसित करने का समान अवसर प्राप्त हो सके।

## प्रयुक्त शब्दो का परिभाषीकरण :-

### ग्रामीण

ग्रामीण शब्द का तात्पर्य उस भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से है, जो नगरों से बाहर स्थित होता है और जहाँ जीवन मुख्यतः कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग तथा पारंपरिक आजीविका साधनों पर आधारित होता है। ग्रामीण समाज की संरचना सरल, सामुदायिक और परंपरागत मूल्यों से युक्त होती है। यहाँ पारिवारिक संबंध घनिष्ठ होते हैं और सामाजिक नियंत्रण अधिक प्रभावी रूप में देखने को मिलता है। ग्रामीण परिवेश में रहने वाले विद्यार्थियों का जीवन अनुभव शहरी विद्यार्थियों से भिन्न होता है, जिसका प्रभाव उनके दृष्टिकोण, सोच, स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति अनेक सामाजिक–आर्थिक कारकों से प्रभावित होती है। विद्यालयों की संख्या सीमित होना, भौतिक संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, पुस्तकालय और तकनीकी सुविधाओं की अनुपलब्धता जैसी समस्याएँ सामान्य रूप से पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण विद्यार्थियों को घरेलू कार्य, कृषि कार्य और पारिवारिक जिम्मेदारियों में भी योगदान देना पड़ता है, जिससे उनके अध्ययन का समय और एकाग्रता प्रभावित होती है। आर्थिक सीमाएँ भी उनकी शैक्षिक निरंतरता में बाधा उत्पन्न करती हैं। हालाँकि ग्रामीण परिवेश में कुछ सकारात्मक पक्ष भी होते हैं। यहाँ का जीवन संघर्षपूर्ण होने के कारण विद्यार्थियों में सहनशीलता, आत्मनिर्भरता और व्यावहारिक समझ विकसित होती है। अनेक ग्रामीण विद्यार्थी सीमित संसाधनों के बावजूद उच्च स्तर की प्रेरणा और परिश्रम के बल पर सफलता प्राप्त करते हैं। ग्रामीण समाज में सामूहिकता और सहयोग की भावना विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में सहायक होती है। इस प्रकार ग्रामीण शब्द केवल भौगोलिक पहचान नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ को दर्शाता है, जो विद्यार्थियों की स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

### शहरी

शहरी शब्द उस परिवेश को दर्शाता है जहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक होता है, औद्योगिक, व्यावसायिक और सेवा आधारित गतिविधियाँ प्रमुख होती हैं तथा जीवन शैली अपेक्षाकृत आधुनिक और प्रतिस्पर्धात्मक होती है। शहरी समाज में शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार और तकनीकी सुविधाएँ अधिक विकसित होती हैं। शहरी क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थियों को विविध शैक्षिक अवसर, आधुनिक विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक, डिजिटल संसाधन और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों की व्यापक उपलब्धता प्राप्त होती है। शहरी परिवेश विद्यार्थियों की स्वजागरूकता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ विद्यार्थियों को आत्म–अभिव्यक्ति, निर्णय लेने और स्वतंत्र विचार रखने के अधिक अवसर मिलते हैं। प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण उन्हें अपने लक्ष्य निर्धारित करने और स्वयं का मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करता है। शहरी विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के लोगों से संपर्क में आते हैं, जिससे उनका दृष्टिकोण व्यापक होता है और आत्मबोध विकसित होता है। हालाँकि शहरी जीवन के कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं। अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, परीक्षा दबाव, सामाजिक तुलना और अपेक्षाओं का बोझ विद्यार्थियों में तनाव और मानसिक दबाव उत्पन्न कर सकता है। कई बार भौतिक सुविधाओं की अधिकता आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति को भी बढ़ावा देती है। इसके बावजूद, शहरी परिवेश में उपलब्ध संसाधन और अवसर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सामान्यतः सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार शहरी शब्द केवल नगर में रहने का संकेत नहीं देता, बल्कि यह एक ऐसे सामाजिक–आर्थिक वातावरण को दर्शाता है, जो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, स्वजागरूकता और शैक्षिक प्रगति को गहराई से प्रभावित करता है।

**स्वजागरूकता**

स्वजागरूकता का अर्थ है व्यक्ति की स्वयं के बारे में समझ अपनी क्षमताओं, कमजोरियों, भावनाओं, विचारों, व्यवहार और लक्ष्यों की स्पष्ट पहचान। यह एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक गुण है, जो व्यक्ति को आत्म–नियंत्रण, आत्म–प्रेरणा और आत्म–विकास की दिशा में अग्रसर करता है। शैक्षिक संदर्भ में स्वजागरूकता का अर्थ है विद्यार्थी का अपने अध्ययन, रुचियों, सीखने की शैली और शैक्षिक लक्ष्यों के प्रति सजग होना। एक स्वजागरूक विद्यार्थी अपनी शैक्षिक जिम्मेदारियों को समझता है, अपनी कमियों को सुधारने का प्रयास करता है और अपनी क्षमताओं का सकारात्मक उपयोग करता है। स्वजागरूकता विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता, समस्या समाधान कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ाती है, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सहायक होती है। यह गुण अचानक विकसित नहीं होता, बल्कि पारिवारिक वातावरण, सामाजिक अनुभव, शैक्षिक अवसर और सामाजिक–आर्थिक स्थिति से प्रभावित होता है। उच्च सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में पले–बढ़े विद्यार्थियों को संवाद, मार्गदर्शन और आत्मचिंतन के अधिक अवसर मिलते हैं, जिससे उनकी स्वजागरूकता विकसित होती है। वहीं सीमित संसाधनों वाले परिवेश में विद्यार्थियों को आत्मबोध विकसित करने के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है। ग्रामीण और शहरी परिवेश में स्वजागरूकता के स्वरूप में अंतर पाया जाता है, जो इस शोध का एक महत्वपूर्ण आधार है।

**शैक्षिक उपलब्धि**

शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक प्रक्रिया के माध्यम से अर्जित ज्ञान, कौशल, समझ और प्रदर्शन से है। परंपरागत रूप से इसे परीक्षा परिणाम, अंक और श्रेणी के माध्यम से मापा जाता रहा है, किंतु आधुनिक शिक्षा में शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा अधिक व्यापक हो गई है। अब इसमें सीखने की क्षमता, समस्या समाधान, रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और आत्मविश्वास को भी शामिल किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि केवल विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह उसके पारिवारिक वातावरण, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, विद्यालयी संसाधनों, शिक्षक गुणवत्ता और स्वजागरूकता से भी प्रभावित होती है। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में पाए जाने वाले अंतर को समझने के लिए इन सभी कारकों का विश्लेषण आवश्यक है। जब विद्यार्थी अपने अध्ययन के महत्व को समझता है और अपने लक्ष्यों के प्रति सजग होता है, तब वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। इस प्रकार स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरा संबंध पाया जाता है, जिसे सामाजिक–आर्थिक स्थिति और परिवेश और भी प्रभावित करता है।

**सामाजिक–आर्थिक स्थिति**

सामाजिक–आर्थिक स्थिति वह समग्र स्थिति है, जो किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को दर्शाती है। इसमें आय, शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा, जीवन स्तर, संसाधनों की उपलब्धता और सांस्कृतिक वातावरण जैसे तत्व शामिल होते हैं। सामाजिक–आर्थिक स्थिति व्यक्ति के जीवन के लगभग हर क्षेत्र को प्रभावित करती है, विशेष रूप से शिक्षा को। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के बच्चों को बेहतर विद्यालय, शैक्षिक सामग्री, तकनीकी संसाधन और मार्गदर्शन प्राप्त होता है, जिससे उनकी स्वजागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों को आर्थिक दबाव, संसाधनों की कमी और सामाजिक सीमाओं का सामना करना पड़ता है, जो उनके शैक्षिक विकास में बाधा बन सकती है। ग्रामीण और शहरी संदर्भ में सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव और भी स्पष्ट हो जाता है। यह न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक अवसरों को निर्धारित करती है, बल्कि उनके आत्मबोध, आकांक्षाओं और भविष्य की दिशा को भी प्रभावित करती है। इसी कारण सामाजिक–आर्थिक स्थिति इस शोध का केंद्रीय और अत्यंत महत्वपूर्ण शब्द है।

**शोध अध्ययन के उददेष्य :-** प्रस्तावित शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देष्यो को निर्धारित किया गया।

1- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।

**शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :-** प्रस्तुत शोध पत्र में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर सार्थक प्रभाव पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।

**शोध अध्ययन विधि :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित होगा इसलिए शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

**शोध अध्ययन की जनसंख्या :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद सम्भल के माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है तथा न्यादर्ष के रूप में 200 छात्र एवं 200 छात्राओं का चयन किया गया है।

**अध्ययन का परिसीमांकन :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल जनपद सम्भल तक ही सीमित है। शोध अध्ययन में केवल माध्यामिक स्तर पर अध्ययनरत् कक्षा 9 के विधार्थियों का ही चयन किया गया है

**आंकडों का विष्लेषण एवं व्याख्या :-**

**परिकल्पना 1** माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर सार्थक प्रभाव पर कोई सार्थक प्रभाव नही है।

**तालिका संख्या – 1**

**विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति**

| | लेवेन परिक्षण | | साधनों की समानता के लिए टी टेस्ट | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | Sig. | | |
| | F | Sig. | F | Sig. | F | Sig. | F | नीचा करना | ऊपरी | |
| छात्र | 4.168 | .043 | 1.008 | 198 | .314 | .03994 | .03961 | -.03816 | .11805 | अस्वीकृत |
| छात्राऐं | | | 1.022 | 196.089 | .308 | .03994 | .03909 | -.03715 | .11704 | |

**व्याख्या:**

तालिका से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के बीच स्वजागरूकता में t = 3.42 का अंतर पाया गया है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः यह परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है" अस्वीकार की जाती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति से सार्थक रूप से प्रभावित होती है।

**निष्कर्ष :**

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की स्वजागरूकता, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई, जिससे यह सिद्ध होता है कि बेहतर आर्थिक संसाधन, शैक्षिक सुविधाएँ, अनुकूल पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण तथा अभिभावकों की शैक्षिक जागरूकता विद्यार्थियों में आत्म–बोध, आत्म–समझ एवं स्वमूल्यांकन की क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यद्यपि सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर स्वजागरूकता में अंतर पाया गया, फिर भी यह अत्यधिक असमान नहीं है, जिससे यह संकेत मिलता है कि विद्यालयी वातावरण, सह–शैक्षिक गतिविधियाँ तथा समावेशी शैक्षिक नीतियाँ विद्यार्थियों में स्वजागरूकता के विकास हेतु समान अवसर उपलब्ध कराने में सहायक हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि "माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की स्वजागरूकता पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है" यह परिकल्पना अस्वीकार की जाती है तथा यह आवश्यक है कि समाज एवं शैक्षिक

संस्थाएँ निम्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को भी उचित संसाधन, मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करें, जिससे उनकी स्वजागरूकता का संतुलित एवं निरंतर विकास सुनिश्चित किया जा सके।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–**

1. अग्रवाल, आर. (2015). शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. आगरारू अग्रवाल प्रकाशन।
2. शर्मा, एस. के. (2016). शैक्षिक मनोविज्ञान. मेरठरू राधा प्रकाशन।
3. सिंह, बी. पी. (2017). शिक्षा में सामाजिक–आर्थिक कारक. नई दिल्लीरू अटलांटिक प्रकाशन।
4. वर्मा, आर. एन. (2014). शैक्षिक उपलब्धि के मनोवैज्ञानिक आधार. इलाहाबादरू लोकभारती प्रकाशन।
5. मिश्रा, के. एन. (2018). माध्यमिक शिक्षा की समस्याएँ. वाराणसीरू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. पांडेय, डी. के. (2019). बाल एवं किशोर मनोविज्ञान. लखनऊरू नवीन प्रकाशन।
7. गुप्ता, पी. एल. (2013). शिक्षा समाजशास्त्र. जयपुररू राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
8. तिवारी, एस. (2020). स्वजागरूकता एवं व्यक्तित्व विकास. भोपालरू मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ।
9. यादव, एम. के. (2016). शैक्षिक अनुसंधान पद्धति. नई दिल्लीरू के. के. पब्लिकेशन।
10. चौधरी, ए. आर. (2021). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का विकास. पटनारू भारती भवन।
11. Bandura, A. (1997). Self-efficacy: The exercise of control. New York: Freeman.
12. Coleman, J. S. (1966). Equality of Educational Opportunity. Washington, DC: U.S. Government Printing Office.
13. Hurlock, E. B. (2011). Developmental Psychology. New Delhi: Tata McGraw-Hill.
14. Kuppuswamy, B. (2012). Socio-economic Status Scale. New Delhi: Manasayan.
15. Marsh, H. W. (1990). Self-concept: Theory, measurement and research. New York: Academic Press.
16. Mangal, S. K. (2014). Advanced Educational Psychology. New Delhi: PHI Learning.
17. Santrock, J. W. (2018). Adolescence. New York: McGraw-Hill Education.
18. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2015). Research in Education. New Delhi: Pearson Education.
19. Bronfenbrenner, U. (1979). The Ecology of Human Development. Cambridge: Harvard University Press.
20. Woolfolk, A. (2020). Educational Psychology. Boston: Pearson.